सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अन'आम

मवेशी

पूरा सफ़र — एक ही रात में उतरी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 6 • 165 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

कतब 'अला नफ़्सिहिर्-रहमह
12. उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है।

व 'इन्दहू मफ़ातिहुल्-ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हू
59. और उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं; उन्हें उस के सिवा कोई नहीं जानता।

व मा मिन दाब्बतिन फ़िल्-अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला उममुन अम्सालुकुम
38. और ज़मीन पर कोई जानदार नहीं, न कोई परिंदा जो अपने दोनों परों से उड़ता हो, मगर वो तुम्हारे जैसी उम्मतें हैं।

क़ुल इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम
161. कहो: बेशक मेरे रब ने मुझे सीधे रास्ते की हिदायत दी।

क़ुल इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन
162. कहो: बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह, जहानों के रब के लिए है।

मन जा-अ बिल्-हसनति फ़-लहू 'अश्रु अम्सालिहा
160. जो एक नेकी ले कर आए उसके लिए उस जैसी दस हैं।

एक ही रात में उतरी

बेटा, शुरू करने से पहले आपको इस सूरह के बारे में एक बात जान लेनी चाहिए। रिवायात में है कि **ये एक ही रात में, एक साथ नाज़िल हुई**, और इस के साथ इतने फ़रिश्ते थे कि उन्होंने उफ़ुक़ को अपनी तस्बीह से भर दिया।

और क़ुरआन का बड़ा हिस्सा तेईस साल में टुकड़ों में उतरा, वाक़िआत के जवाब में। **ये पूरी की पूरी आई।**

और जब आप इसे पढ़ते हैं, आपको समझ आता है कि क्यों। **ये सूरह शुरू से आख़िर तक तौहीद — अल्लाह की वहदानियत — की एक मुसलसल दलील है। ये अहकाम**

का मजमूआ नहीं; ये वो बुनियाद है जिस पर बाक़ी सब कुछ खड़ा है। और बुनियाद एक ही बार में डाली जाती है।

'**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी ख़लक़स्-समावाति वल्-अर्ज़ व ज'अलज़्-ज़ुलुमाति वन्-नूर — तारीफ़ अल्लाह के लिए, जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और अंधेरे और नूर बनाए — सुम्मल्-लज़ीन कफ़रू बि-रब्बिहिम यअ्दिलून — फिर भी जिन्होंने कुफ़्र किया वो अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं।**'

बेटा, लफ़्ज़ '**सुम्म**' ग़ौर कीजिए — **फिर।** उसने ये सब बनाया... **और फिर** उन्होंने उसके मुक़ाबले में दूसरे खड़े कर दिए। इस लफ़्ज़ में हैरत का रंग है।

'**हुवल्-लज़ी ख़लक़कुम मिन तीनिन सुम्म क़ज़ा अजलंव्-व अजलुम्-मुसम्मन 'इन्दह** — वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया फिर एक मुद्दत मुक़र्रर की, और एक मुअय्यन मुद्दत उसी के पास है — **सुम्म अन्तुम तम्तरून** — फिर भी तुम शक में पड़े हो।'

और फिर सूरह उन्हें तारीख़ देखने को कहती है: '**अ लम यरौ कम अह्लक्ना मिन क़ब्लिहिम मिन क़र्निम्-मक्कन्नाहुम फ़िल्-अर्ज़ि मा लम नुमक्किल्-लकुम** — क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उन से पहले कितनी नस्लें तबाह कीं, जिन्हें हमने ज़मीन में **ऐसा जमाया था जैसा तुम्हें नहीं जमाया?**'

बेटा, ये हर ख़ुद-ए'तिमाद तहज़ीब के लिए एक आजिज़ी सिखाने वाली लाइन है: **उन क़ौमों को तुम से ज़्यादा दिया गया था, और वो मिट चुकी हैं।**

और फिर, बेटा, ख़ुद अल्लाह के बारे में पूरे क़ुरआन के सब से ग़ैर-मामूली बयानात में से एक:

'**क़ुल लिमम्-मा फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ — कहो: आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वो किसका है? — क़ुल लिल्लाह — कहो: अल्लाह का — कतब 'अला नफ़्सिहिर्-रहमह — उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है।**'

बेटा, यहाँ रुकिए। 'कतब 'अला नफ़्सिहिर्-रहमह' — उसने **अपने ऊपर** रहमत **लिख**

ली।

कोई अल्लाह पर कुछ लाज़िम नहीं कर सकता। उन से बाहर कोई चीज़ उन से कुछ तलब नहीं कर सकती। और फिर भी उन्होंने रहमत को ले कर अपने ऊपर लाज़िम कर लिया, अपने ही इंतेख़ाब से।

बेटा, नबी ﷺ ने हमें बताया कि जब अल्लाह ने मख़्लूक़ बनाई, उन्होंने अपने पास एक किताब में, अर्श के ऊपर, लिख दिया: **मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है।**

तो जब आप एक लंबी ग़ैर-हाज़री के बाद उन की तरफ़ लौटते हैं, **आप किसी ना-चार मुंसिफ़ के सामने इल्तिजा नहीं कर रहे। आप उस ज़ात से माँग रहे हैं जिसने आपके वुजूद में आने से पहले ख़ुद को रहमत का पाबंद कर लिया था।**

तुम्हारे जैसी उम्मतें

फिर सूरह मो'जिज़े के मुतालबों को मुख़ातिब करती है, बेटा, और एक ज़बरदस्त जवाब देती है: **अगर काग़ज़ पर लिखी हुई एक किताब भी उतर आती जिसे वो अपने हाथों से छू लेते, तो वो कहते ये जादू है। मसला कभी सबूत का न था।**

और फिर मुंकिरों का बयान जब वो उस दिन हक़ देखेंगे: '**या लैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़िब बि-आयाति रब्बिना — काश हम वापस भेजे जाते, और हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाते।**' और अल्लाह का तब्सिरा: '**व लौ रुद्दू ल-'आदू लिमा नुहू 'अन्ह — मगर अगर वो वापस भेजे जाते, तो वो ठीक उसी तरफ़ लौट जाते जिस से उन्हें रोका गया था।**'

बेटा, **ये इंसानी फ़ितरत पर एक ईमानदार फ़ैसला है। उस लम्हे की नदामत सची होती है; तबदीली आम तौर पर नहीं।**

और फिर, बेटा, एक आयत जो हर ज़िंदा चीज़ को देखने का आपका अंदाज़ बदल देगी:

'**व मा मिन दाब्बतिन फ़िल्-अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला उममुन अम्सालुकुम — और ज़मीन पर कोई जानदार नहीं, न कोई परिंदा जो अपने दोनों**

परों से उड़ता हो, मगर वो तुम्हारे जैसी उम्मतें हैं — मा फ़र्रत्ना फ़िल्-किताबि मिन शै — हमने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी — सुम्म इला रब्बिहिम युह्शरून — फिर अपने रब ही की तरफ़ वो जमा किए जाएँगे।'

बेटा, '**उममुन अम्सालुकुम**' — **तुम्हारे जैसी क़ौमें।** हर नस्ल एक उम्मत है, अपनी तरतीब के साथ, अपने जीने के अंदाज़ के साथ, अपने रिज़्क़ के साथ — और अपने रब के सामने अपने इकट्ठे होने के साथ।

बेटा, **सिर्फ़ ये एक आयत एक मोमिन को जानवरों के साथ नर्म बना देनी चाहिए। वो मंज़र का हिस्सा नहीं। वो क़ौमें हैं, और वो जमा किए जाएँगे।**

और ग़ौर कीजिए: 'मा फ़र्रत्ना फ़िल्-किताबि मिन शै' — **कुछ भी छोड़ा नहीं गया।**

'**व लौ शा-अल्लाहु ल-जम'अहुम 'अलल्-हुदा फ़-ला तकूनन्न मिनल्-जाहिलीन** — और अगर अल्लाह चाहते तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देते, तो तुम हरगिज़ ना-दानों में से मत होना।'

'**इन्नमा यस्तजीबुल्-लज़ीन यस्म'ऊन — जवाब सिर्फ़ वही देते हैं जो सुनते हैं — वल्-मौता यब्'असुहुमुल्-लाह** — और मुर्दे — उन्हें अल्लाह उठाएँगे।'

बेटा, ये ख़ौफ़नाक तक़सीम ग़ौर कीजिए: **जो जवाब नहीं देते उन्हें मुर्दा कहा गया। सुन कर जवाब न देना एक क़िस्म की मौत है।**

ग़ैब की कुंजियाँ

और अब, बेटा, क़ुरआन की सब से मशहूर आयतों में से एक:

'**व 'इन्दहू मफ़ातिहुल्-ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हू — और उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं; उन्हें उस के सिवा कोई नहीं जानता।'**

'**व यअ्लमु मा फ़िल्-बर्रि वल्-बह — और वो जानता है जो ख़ुश्की में और समंदर में है — व मा तस्क़ुतु मिंव्-वरक़तिन इल्ला यअ्लमुहा — और एक पत्ता भी नहीं गिरता मगर वो उसे जानता है — व ला हब्बतिन फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्-व ला याबिसिन इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन — और न ज़मीन के अंधेरों में**

कोई दाना, और न कोई तर या ख़ुश्क चीज़, मगर वो एक वाज़ेह किताब में है।'

बेटा, इस की वुस'अत के साथ बैठिए। **हर वो पत्ता जो कभी किसी टहनी से जुदा हुआ, ज़मीन की किसी भी जगह पर, किसी भी सदी में, किसी ऐसे जंगल में जहाँ कोई इंसान कभी चला ही नहीं — वो उसे गिरते हुए जानते थे।**

हर वो बीज जो मिट्टी के नीचे अंधेरे में पड़ा है। हर तर चीज़ और हर ख़ुश्क चीज़।

बेटा, और ये आपको डराने के लिए नहीं कहा गया। **ये तसल्ली के तौर पर कहा गया। क्योंकि अगर वो एक ख़ाली जंगल में गिरते पत्ते को जानते हैं, तो वो ठीक ठीक जानते हैं कि आपके साथ क्या हो रहा है। आपकी सूरत-ए-हाल उन की नज़र से निकली नहीं। आपकी कोशिश बे-रिकॉर्ड नहीं गई। आपका दर्द बे-गवाह नहीं।**

और फिर, बेटा, नींद के बारे में एक आयत जिसे कम लोग ग़ौर करते हैं:

'**व हुवल्-लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम बिल्-लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम बिन्-नहारि सुम्म यब्'असुकुम फ़ीहि लि-युक़्ज़ा अजलुम्-मुसम्मा — और वही है जो रात को तुम्हारी जानें क़ब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुमने दिन में कमाया, फिर उस में तुम्हें उठाता है, ताकि एक मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो।**'

बेटा, **हर रात आप एक छोटी मौत मरते हैं और लौटाए जाते हैं। नींद एक मश्क़ है, और जागना एक छोटी क़ियामत।** इसी लिए जागने की दुआ है: तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जिसने हमें मौत देने के बाद ज़िंदगी दी, और उसी की तरफ़ उठना है।

'**व हुवल्-क़ाहिरु फ़ौक़ 'इबादिही व युर्सिलु 'अलैकुम हफ़ज़ह** — और वो अपने बंदों पर ग़ालिब है, और वो तुम पर हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते भेजता है।'

इब्राहीम और रात का आसमान

और अब, बेटा, क़ुरआन के सब से ख़ूबसूरत हिस्सों में से एक — नौजवान इब्राहीम (अलैहि0) अपनी अक़्ल से अपने रब तक पहुँचते हुए, उन लोगों के सामने जो आसमानों को पूजते थे।

'**फ़-लम्मा जन्न 'अलैहिल्-लैलु र-आ कौकबन क़ाल हाज़ा रब्बी** — **तो जब रात ने**

उसे ढाँप लिया, उसने एक सितारा देखा। उसने कहा: ये मेरा रब है — फ़-लम्मा अफ़ल क़ाल ला उहिब्बुल्-आफ़िलीन — मगर जब वो डूब गया, उसने कहा: मैं डूब जाने वालों से मोहब्बत नहीं करता।'

'**फ़-लम्मा र-अल्-क़मर बाज़िग़न क़ाल हाज़ा रब्बी** — और जब उसने चाँद को चढ़ते देखा, कहा: ये मेरा रब है — **फ़-लम्मा अफ़ल क़ाल ल-इल्-लम् यह्दिनी रब्बी ल-अकूनन्न मिनल्-क़ौमिज़्-ज़ाल्लीन** — मगर जब वो डूब गया, उसने कहा: **अगर मेरे रब ने मुझे हिदायत न दी तो मैं ज़रूर गुमराह क़ौम में से हो जाऊँगा।**'

'**फ़-लम्मा र-अश्-शम्स बाज़िग़तन क़ाल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बर** — और जब उसने सूरज को चढ़ते देखा, कहा: ये मेरा रब है; **ये तो सब से बड़ा है — फ़-लम्मा अफ़लत क़ाल या क़ौमि इन्नी बरी-उम्-मिम्मा तुश्रिकून** — मगर जब वो डूब गया, उसने कहा: **ऐ मेरी क़ौम, मैं उस से बरी हूँ जिसे तुम शरीक ठहराते हो।**'

'**इन्नी वज्जह्तु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्-समावाति वल्-अर्ज़ हनीफ़ंव्-व मा अना मिनल्-मुश्रिकीन — बेशक, मैंने अपना रुख़ उस ज़ात की तरफ़ कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, यक-सू हो कर, और मैं मुश्रिकों में से नहीं।**'

बेटा, समझिए वो क्या कर रहे थे। **उलमा समझाते हैं कि वो वाक़ई शक में न थे — वो अपनी क़ौम को उनकी अपनी ही मंतिक़ में क़दम ब क़दम चला कर सिखा रहे थे, यहाँ तक कि वो उनके अपने हाथों में ढह गई।**

और उनका तरीक़ा देखिए। **उन्होंने उनके ख़ुदाओं को गाली दे कर शुरू नहीं किया।** उन्होंने कहा: ठीक है — चलो तुम्हारे आसमान की सब से चमकदार चीज़ ले लेते हैं। और फिर उन्होंने उसके **डूबने** का इंतेज़ार किया।

'**ला उहिब्बुल्-आफ़िलीन**' — **मैं डूब जाने वालों से मोहब्बत नहीं करता।**

बेटा, ये आपकी पूरी ज़िंदगी के लिए एक उसूल है, सितारों से कहीं आगे। **जो चीज़ डूबती है उस से दिल लगाने की क़ीमत नहीं। ख़ूबसूरती डूबती है। ताक़त डूबती है। दौलत डूबती है। मुक़ाम डूबता है। लोग डूबते हैं — उन में से हर एक, उन समेत जिन से आप सब से ज़्यादा मोहब्बत करते हैं।**

अपना दिल उस ज़ात से लगाइए जो कभी नहीं डूबती।

और उनकी क़ौम ने उन से बहस की, और अल्लाह ने कहा: '**व तिल्क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राहीम 'अला क़ौमिह — और ये हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी — नर्फ़'उ दरजातिम्-मन नशा — हम जिसे चाहें दर्जों में बुलंद करते हैं।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **दलील तक उन्हें दी गई थी। उनकी सोच भी ख़ुद एक अता थी।**

फिर सूरह अठारह अंबिया के नाम गिनवाती है — इस्हाक़, याक़ूब, नूह, दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा, हारून, ज़करिया, यह्या, 'ईसा, इल्यास, इस्माईल, अल-यसा', यूनुस, लूत — और उन के बारे में कहती है: '**उलाइकल्-लज़ीन हदल्-लाहु फ़-बि-हुदाहुमुक़्-तदिह — यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, तो तुम उनकी हिदायत की पैरवी करो।**'

उनके ख़ुदाओं को गाली मत दो

फिर सूरह एक ऐसा उसूल देती है, बेटा, जो इस दीन की हिकमत दिखाता है:

'**व ला तसुब्बुल्-लज़ीन यद्'ऊन मिन दूनिल्-लाहि फ़-यसुब्बुल्-लाह 'अद्वम्-बि-ग़ैरि 'इल्म — और जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पुकारते हैं उन्हें गाली मत दो, वरना वो दुश्मनी में, बिना इल्म के, अल्लाह को गाली देंगे।**'

बेटा, इसे ग़ौर से पढ़िए। **उनके बुत झूठे थे — पूरी तरह, साफ़ ज़ाहिर तौर पर झूठे। और फिर भी मोमिनीन को उन्हें गाली देने से रोका गया।**

क्यों? **क्योंकि जो नतीजा होने वाला है वो ये है कि वो बदले में अल्लाह को गाली देंगे। और उसका सबब आप बनेंगे।**

बेटा, ये बेहद अमली क़ीमत का उसूल है। **काटने वाली बात कहने से पहले — सच्ची काटने वाली बात कहने से भी पहले — पूछिए कि ये क्या पैदा करेगी। एक बहस जीत लेना और ज़्यादा नुक़सान पैदा कर देना फ़तह नहीं है।**

'**कज़ालिक ज़य्यन्ना लि-कुल्लि उम्मतिन 'अमलहुम** — यूँ हमने हर उम्मत के

लिए उनके अमल ख़ूबसूरत बना दिए — **सुम्म इला रब्बिहिम मर्जिउहुम फ़-युनब्बिउहुम बिमा कानू यअ्मलून** — फिर उनके रब ही की तरफ़ उनका लौटना है, और वो उन्हें बताएगा जो वो करते थे।'

फिर सूरह उन रस्मों को बे-नक़ाब करती है जो उन्होंने घढ़ी थीं — फ़सलों और मवेशियों के हिस्से अपने बुतों के नाम करना, कुछ जानवरों को हराम ठहराना, और सब से बुरा: '**व कज़ालिक ज़य्यन लि-कसीरिम्-मिनल्-मुश्रिकीन क़त्ल औलादिहिम शुरका-उहुम** — और यूँ उनके शरीकों ने बहुत से मुश्रिकों के लिए **उनकी औलाद का क़त्ल** ख़ूबसूरत बना दिया।'

बेटा, यहीं से इस सूरह को उसका नाम मिलता है — '**अल-अन'आम**', मवेशी — क्योंकि **उनके घढ़े हुए दीन का इतना बड़ा हिस्सा इसी पर था कि कौनसे जानवर जायज़ हैं और कौनसे मम्नू', जब कि वो अपनी बेटियाँ ज़िंदा दफ़्न कर रहे थे।**

बेटा, **यही होता है जब लोग अपना दीन ख़ुद बना लेते हैं: वो छोटी घढ़ी हुई बातों पर इंतेहाई सख़्त हो जाते हैं और बहुत बड़ी अस्ली बातों से नज़र हटा लेते हैं।**

'**क़द ख़सिरल्-लज़ीन क़तलू औलादहुम सफ़हम्-बि-ग़ैरि 'इल्म** — वो घाटे में पड़े जिन्होंने बेवक़ूफ़ी में, बिना इल्म के, अपनी औलाद को क़त्ल किया।'

क़ुरआन के दस अहकाम

और अब, बेटा, हम इस सूरह की चोटी पर पहुँचे — तीन आयतें जिन्हें उलमा ने वो अहकाम कहा जो हर किताब में थे, और जिन के बारे में रिवायत है कि नबी ﷺ ने इशारा किया कि उन पर उनकी मोहर है।

'**क़ुल त'आलौ अत्लु मा हर्रम रब्बुकुम 'अलैकुम — कहो: आओ, मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया।**'

एक — '**अल्ला तुश्रिकू बिही शै-आ** — कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ।'

दो — '**व बिल्-वालिदैनि इह्साना** — और माँ-बाप के साथ **हुस्न-ए-सुलूक**।' बेटा,

फिर वही — **फ़ेहरिस्त की दूसरी चीज़, तौहीद के फ़ौरन बाद।**

तीन — '**व ला तक़्तुलू औलादकुम मिन इम्लाक़िन नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम व इय्याहुम** — और अपनी औलाद को ग़ुर्बत की वजह से क़त्ल मत करो; **हम तुम्हें और उन्हें रिज़्क़ देते हैं।**'

बेटा, यहाँ रिज़्क़ की तरतीब सूरह अल-इस्रा से मिलाइए। वहाँ, जहाँ डर **आने वाली** ग़ुर्बत का था, कहा गया 'हम **उन्हें** और तुम्हें रिज़्क़ देते हैं'। यहाँ, जहाँ ग़ुर्बत **मौजूदा** है, कहा गया 'हम **तुम्हें** और उन्हें रिज़्क़ देते हैं'। **क़ुरआन हर सूरत में ठीक उस ख़ौफ़ को मुख़ातिब करता है।**

चार — '**व ला तक़्रबुल्-फ़वाहिश मा ज़हर मिन्हा व मा बतन** — और बे-हयाई के क़रीब मत जाओ, उसके ज़ाहिर के भी और उसके **छुपे** के भी।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **छुपे हुए का भी नाम लिया गया। वो गुनाह जिसे कोई नहीं देखता उसी फ़ेहरिस्त में है।**

पाँच — '**व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्-लती हर्रमल्-लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़** — और उस जान को क़त्ल मत करो जिसे अल्लाह ने हराम किया, सिवाए हक़ के।'

'**ज़ालिकुम वस्साकुम बिही ल'अल्लकुम तअ्क़िलून** — इस की उसने तुम्हें वसीयत की ताकि तुम **अक़्ल से काम लो।**'

छे — '**व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हिय अह्सनु हत्ता यब्लुग़ अशुद्दह** — और यतीम के माल के क़रीब मत जाओ सिवाए उस तरीक़े से जो बेहतर है, जब तक वो अपनी पुख़्तगी को पहुँचे।'

सात — '**व औफ़ुल्-कैल वल्-मीज़ान बिल्-क़िस्त** — और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरा करो।'

और फिर, बेटा, अहकाम के बीच में एक रहमत रख दी गई: '**ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन इल्ला वुस्'अहा — हम किसी जान पर उसकी गुंजाइश से ज़्यादा बोझ नहीं डालते।**'

बेटा, ये जुमला ठीक नाप-तौल वाले हुक्म के बाद रखा गया — **क्योंकि एक ताजिर**

डर सकता था कि एक ज़र्रा सी ग़ैर-इरादी ग़लती उसे तबाह कर देगी। और अल्लाह कहते हैं: तुम सिर्फ़ उसी के पाबंद हो जो तुम सँभाल सको।

आठ — 'व इज़ा क़ुल्तुम फ़अ्दिलू व लौ काना ज़ा क़ुर्बा — और जब तुम बात करो तो इंसाफ़ करो, चाहे वो किसी क़रीबी रिश्तेदार ही का मामला हो।'

बेटा, ये वाला मुस्तक़िल नज़र-अंदाज़ होता है। **बोलने में इंसाफ़** — उस में जो आप लोगों के बारे में कहते हैं, जिसका आप साथ देते हैं, जिस तरह आप एक झगड़े की ख़बर देते हैं। और ख़ास तौर पर: **तब भी जब वो आपका अपना ख़ानदान, आपकी अपनी जमाअत, आपकी अपनी तरफ़ हो।**

नौ — 'व बि-'अह्दिल्-लाहि औफ़ू — और अल्लाह का अह्द पूरा करो।'

'ज़ालिकुम वस्साकुम बिही ल'अल्लकुम तज़क्करून — इस की उसने तुम्हें वसीयत की ताकि तुम **याद रखो।'**

दस — 'व अन्न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन फ़त्तबि'ऊह — और ये मेरा सीधा रास्ता है, तो इसी की पैरवी करो — व ला तत्तबि'उस्-सुबुल फ़-तफ़र्रक़ बिकुम 'अन सबीलिह — और दूसरे रास्तों की पैरवी मत करो, वरना वो तुम्हें उसके रास्ते से अलग कर देंगे।'

बेटा, रिवायत है कि नबी ﷺ ने रेत में एक सीधी लकीर खींची और फ़रमाया: **ये अल्लाह का रास्ता है।** और फिर दोनों तरफ़ से निकलती हुई लकीरें खींच कर फ़रमाया: **ये दूसरे रास्ते हैं, और उन में से हर एक पर एक शैतान उसकी तरफ़ बुला रहा है।** और फिर आपने ये आयत तिलावत की।

बेटा, ग्रामर ग़ौर कीजिए: **सीधा रास्ता वाहिद है — 'सिराती मुस्तक़ीमन'। बाक़ी जमा हैं — 'अस्-सुबुल'। एक सड़क, बहुत से निकास।**

मेरी नमाज़, मेरा जीना, मेरा मरना

और अब, बेटा, सूरह क़ुरआन की कुछ सब से मुकम्मल आयतों पर ख़त्म होती है।

'मन जा-अ बिल्-हसनति फ़-लहू 'अश्रु अम्सालिहा — जो एक नेकी ले कर आए

उसके लिए उस जैसी दस हैं — व मन जा-अ बिस्-सय्यि-अति फ़-ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा — और जो एक बुराई ले कर आए उसे सिर्फ़ उसी के बराबर बदला मिलेगा — व हुम ला युज़्लमून — और उन पर ज़ुल्म न होगा।'

बेटा, अपने रब का हिसाब देखिए। **एक नेकी दस से ज़र्ब हो जाती है** — और दूसरी रिवायात में सात सौ और उस से भी आगे तक। **एक बुराई ठीक एक गिनी जाती है।**

बेटा, **ये रहमत का हिसाब है। अगर बराबर होता — एक के बदले एक — तो हम में से ज़्यादा तर बड़े मुश्किल में होते। मगर दस के मुक़ाबले एक पर, वो शख़्स भी उम्मीद रख सकता है जो मामूली सी भलाई करता हो।**

'**क़ुल इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीमिन दीनन क़ियमम्-मिल्लत इब्राहीम हनीफ़ा** — कहो: मेरे रब ने मुझे सीधे रास्ते की हिदायत दी — एक क़ायम दीन, इब्राहीम का तरीक़ा, हक़ की तरफ़ झुका हुआ — **व मा काना मिनल्-मुश्रिकीन**।'

और फिर वो आयत जिसे एक मुसलमान को अपने ज़ाती एलान के तौर पर उठाना चाहिए, बेटा:

'**क़ुल इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — कहो: बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह, जहानों के रब के लिए है — ला शरीक लह — उसका कोई शरीक नहीं — व बि-ज़ालिक उमिर्तु व अना अव्वलुल्-मुस्लिमीन** — और इसी का मुझे हुक्म दिया गया, और मैं पहला मुसलमान हूँ।'

बेटा, चार चीज़ें देखिए जो सुपुर्द की गईं: **मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरी ज़िंदगी, और मेरी मौत।**

पहली दो इबादत हैं — उन की तवक़्क़ो थी। मगर '**मह्याय**' — मेरा **जीना**। इसका मतलब है हर चीज़: **मेरा काम, मेरी आमदनी, मेरी शादी, मेरी दोस्तियाँ, मेरा आराम, मेरी बात, मंगल के एक आम दिन को तीन बजे के मेरे फ़ैसले।**

और '**ममाती**' — मेरा **मरना**। **वो एक वाक़िआ जो मेरे क़ाबू में नहीं, पहले से सौंप**

दिया गया।

बेटा, ये आयत नमाज़ की शुरू की दुआ में एक वजह से पढ़ी जाती है। **ये एक जुमले में पूरा इस्लाम है: मेरा कुछ भी उनकी मिल्कियत से बाहर नहीं।**

'**क़ुल अ ग़ैरल्-लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हुव रब्बु कुल्लि शै** — कहो: क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ, **जब कि वही हर चीज़ का रब है?** — **व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन इल्ला 'अलैहा** — और हर जान जो कमाती है अपने ही ज़िम्मे कमाती है — **व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्-विज़्र उख़्रा** — **और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा।**'

और इस सूरह की आख़िरी आयत, बेटा:

'**व हुवल्-लज़ी ज'अलकुम ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व रफ़'अ ब'अ्ज़कुम फ़ौक़ ब'अ्ज़िन दरजातिल्-लि-यब्लुवकुम फ़ी मा आताकुम** — **और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया और तुम में से बाज़ को बाज़ पर दर्जों में बुलंद किया, ताकि जो उसने तुम्हें दिया उस में तुम्हें आज़माए** — **इन्न रब्बक सरी'उल्-'इक़ाब** — बेशक, तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है — **व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम** — **और बेशक, वो बख़्शने वाला, रहम वाला है।**'

बेटा, इस सूरह की आख़िरी लाइन देखिए, और देखिए ये शुरू कैसे हुई थी।

ये 'कतब 'अला नफ़्सिहिर्-रहमह' से खुली — उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली। और ये 'ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम' पर बंद होती है — बख़्शने वाला, रहम वाला।

इन दोनों के दरमियान, इस सूरह ने एक सौ पैंसठ आयतों में अल्लाह के हर मुक़ाबले को ढा दिया, इब्राहीम की रात के आसमान में तलाश का सफ़र दिखाया, और वो अहकाम रख दिए जो हर क़ौम को दिए गए।

और ये कहती है: **तुम्हारे दरमियान दर्जों का फ़र्क़ — किसके पास ज़्यादा है, किसके पास कम, कौन ऊपर है और कौन नीचे — वही ख़ुद आज़माइश है। जिस चीज़ का आपको ज़्यादा दिया गया, वही आपका इम्तेहान का पर्चा है।**

बेटा, यही सूरह अल-अन'आम है: **एक बुनियाद, एक ही रात में डाली गई।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. उसने रहमत अपने ऊपर लाज़िम की — कोई उन्हें पाबंद नहीं कर सकता था; उन्होंने ख़ुद को बाँधा।

2. हर जानदार और परिंदा 'तुम्हारे जैसी उम्मत' है — वो क़ौमें हैं, और वो जमा किए जाएँगे।

3. एक पत्ता भी उनके इल्म के बग़ैर नहीं गिरता — यानी आपकी सूरत-ए-हाल का कुछ भी उन से छुपा नहीं।

4. 'ला उहिब्बुल्-आफ़िलीन' — मैं डूब जाने वालों से मोहब्बत नहीं करता। जो डूबती है उस चीज़ से दिल मत लगाओ।

5. एक झूठे ख़ुदा को भी गाली मत दो अगर नतीजा ये हो कि बदले में अल्लाह को गाली दी जाए — पूछिए आपके अल्फ़ाज़ क्या पैदा करेंगे।

6. बोलने में इंसाफ़ करो, चाहे अपने रिश्तेदार का मामला हो — और 'जब तुम बात करो' में वो भी शामिल है जो आप लोगों के बारे में कहते हैं।

7. एक नेकी दस गिनी जाती है, एक बुराई एक — यही रहमत का हिसाब है।

क़ुल इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन। आमीन।